Review of ReseaRch
ISSN: 2249-894X
Impact Factor : 5.7631(UIF)
Volume - 12 | Issue - 7 | April - 2023

शिवमूर्ति के उपन्यास में अभिव्यक्त किसान संघर्ष

QÉ. LsÉ. mÉÏ. sÉqÉÉhÉÏ
हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड.

प्रस्तावना:

शिवमूर्ति समकालीन हिंदी साहित्य के विरल कथाकार हैं, जो गाँव, गरीबी व स्त्री के उस यथार्थ के आख्यान रचते हैं, जहाँ एक दूसरों की दृष्टि कम ही पहुंचती है| यह यथार्थ सिर्फ़ उनके उपन्यासों के कथानक अथवा घटनाक्रम में ही नहीं समाहित होता, बल्कि उनकी भाषा, उनके पात्रों के चरित्र, उनके संवाद, हर जगह झलकता है| प्रेमचंद्र और फणीश्वरनाथ 'रेणु' की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले जिन कथाकारों का नाम सर्वाधिक लिया जाता है उनमें शिवमूर्ति महत्वपूर्ण है| उनकी रचनाओं की एक बड़ी विशेषता उनकी भाषा है| इन्होंने अपनी रचनाओं में जिस समाज का चित्रण किया है वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की मूल कड़ी है| इनका कथा साहित्य बड़ी सूक्ष्मता से लोकपक्ष का पूरा ढ़ांचा प्रस्तुत करता है| वह लोकपक्ष पाठक के मानव मस्तिष्क पर छा जाता है| शिवमूर्ति जी के अनुभव का ही कमाल है कि वह इसी लोक शब्दों को कथा साहित्य में बड़ी बारीकी से, विशेषकर पाठकों को एक रसभरी दुनिया में पहुंचा देता है| शिवमूर्ति ने सन् १९९० के बाद तिन उपन्यासों की रचना की उनमें 'तर्पण', 'त्रिशूल', और 'आख़री छलांग' है|

'आख़िरी छलांग' उपन्यास 'नया ज्ञानोदय' के जनवरी २००८ के अंक में प्रकाशित हुआ है| इस उपन्यास में शिवमूर्ति जी ने किसान जीवन की त्रासदी को मार्मिक ढंग से प्रकट किया है| यह उपन्यास किसान जीवन के मर्मातक संघर्ष को प्रस्तुत करता है| इस उपन्यास में केवल यथार्थ ही नहीं है वरन् आशावाद का भी चित्रण हुआ है| कथाकार ने किसान जीवन की समस्याओं को बड़ेही बारीकी ढंग से अपने उपन्यास में दिखाया है| उन्होंने किसानों की मूलभूत समस्या खाद, पानी, बिज, बिजली की समस्या, प्राकृतिक समस्या, फसल का उचित मूल्य न मिलने की समस्या, कर्ज की समस्या तथा आत्महत्या की समस्या को बड़े ही बारीकी से दिखाया है|

कथा नायक पहलवान और उसकी पत्नी पहलवानिन के इर्दगिर्द इस लघु उपन्यास की कथा तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों के ताने-बाने और छोटी-बड़ी घटनाओं के डिटेल्स से बुनी हुई है| किसानी जीवन के दुःख-दर्द, खेती-बाड़ी, सिमित और छोटी जोतों के खेतों से अधिक उपज लेने के लिए महंगे खाद-बीज, किटनासक, बिजली, डीजल, ट्यूबवेल, ट्रैक्टर-ट्राली, जोताई, बुआई, मजदूरी, उपज को बाजार तक ले जाने का किराया-भाड़ा आदि के लिए लिए गए बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थाओं के कर्ज मकड़जाल में फंस कर टूटते बिखरते, अपनी जमीनें गंवाते छोटे-बड़े किसान, हताशा-निराशा के दलदल में फंस कर आत्महत्याएं करने को विवश हैं| अंग्रेजों के राज में प्रेमचंद के गोदान में होरी तमाम समस्याओं और विभिन्न परिस्थितियों को झेलता हुआ अपने जीवन का र्निवाह करता है और आत्महत्या नहीं करता| जमीनों से बेदखल होने के बावजूद वह अपने परिवार का भरण-पोषण करता है लेकिन गोबर को वे नहीं रोक पाते और वह कह उठता है| ***-"दादा का ही कलेजा है कि वह सहते है, मुझसे तो एक दिन न सहा जाए"१*** लेकिन इस उपन्यास

की स्थितियां अत्यंत दारुण हैं जिनका फैलाव राष्ट्रिय ही नहीं अंतरराष्ट्रिय स्तर तक है| सीमांत किसान को उदारीकरण औए नव उदारवादी अर्थव्यवस्था में जिन सरकारी नीतियों ने प्रभावित कर पूरी तरह बर्बाद किया है उसका मार्मिक चित्रण इस उपन्यास में देखने को मिलाता है| शिवमूर्ति ने अपने उपन्यास के नायक पहलवान के माध्यम से पुरे भारत के किसानों की दारुण स्थिति को दिखाने का प्रयास किया है| तथा उनके माध्यम से किसान जीवन की समस्याओं को बेबाकी के साथ उठाया है| पहलवान को समझते हुए एक किसान कहता है - ***"किसान के घर में जनम लिया है तो ऐसी मुसीबतें आती ही रहेंगी| किसान जिंदगी में कभी सुखी नहीं रह सकता| हम किसानों को ऐसी ही परिस्थतियों में जिंदगी की नाव खेना है| जिन किसानों की हालत बनी-संवरी दिखाई देती है, वह किसानी की दम पर नहीं है| उनके घर में कोई कमाने वाला बाहर से मनीआडर भेजता है अपनी तनखा से तब वे किसी हद तक खुशहाल दिखाई देते है|"२***

किसान सबका पेट भरता है लेकिन अपना पेट भरने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है| खेती का खर्चा इतना है कि किसान ठीक से दो वक्त की रोटी तक नहीं जुटा पाता| वह जीवन भर मेनहत करता है और युवावस्था में ही उसके शरीरों पर झुर्रियां दिखने लगाती है वह ३० वर्ष की अवस्था में आते-आते वह ६० वर्ष का हो जाता है-***"जिंदगी के झमेले तो मरते दम तक रहेंगे| साथ नहीं छोड़ेंगे| वे महसूस करते हैं, नहीं, अभी उनकी जवानी गई नहीं है|....पहलवान को बुढ़ापा ! कैसा बुढ़ापा ?३*** उनका साथ देते हुए पहलवानिन कहती हैं-***"मौका मिले तो मौर बांध कर अभी भी वे विवाह करने को निकल पड़ें!"४*** शिवमूर्ति किसानों के वास्तविक चरित्र को पाठक के सामने प्रस्तुत करते है उनके किसान किसी काल्पना के संजोए हुए किसान नहीं है बल्कि वे भारतीय संस्कृति के किसान है|

कथाकार शिवमूर्ति का उपन्यास प्रेमचंद के उपन्यास से काफी भिन्न दिखाई पड़ता है इसकी वजह किसानों के जीवन में अमूलचूल परिवर्तन को देखा जा सकता है| प्रेमचंद के यहाँ जमीदारी प्रथा, पूजीवादी प्रथा, सामंतवाद आदि के द्वारा किसनों का शोषण होता था तो शिवमूर्ति के यहाँ बैंक, सोसायटी, सरकारी योजना के द्वारा किसानों का शोषण होता दिखाई पड़ता है| समस्याएँ अलग-अलग होकर भी एक जैसी ही दिखाई पड़ती है|

उपन्यास की मूलभूत समस्या किसानों की आत्महत्या को ले करके है किसानों की आत्महत्या आज का सवालिया निशान बन चुका है देश में किसानों की आत्महत्या पर अनेक राजनीतिक पार्टियाँ उनका लाभ उठा रही है लेकिन उनके पक्ष में कोई खड़ा दिखाई नहीं पड़ता| आज वर्त्तमान संदर्भ में उनकी समस्याओं को अनेक साहित्यकारों ने अपनेअपने लेखन के द्वारा प्रश्न खड़ा किया है| कथाकार शिवमूर्ति भी इससे अछूते नहीं रहे है वे किसानो की समस्याओं को वर्त्तमान संदर्भ से जोड़कर दिखाने का प्रयास करते है| उपन्यास का नायक पहलवान अपने सपनों में उन तमाम किसानों के संघर्ष को देखता है और उनके माध्यम से वह अपने आप को देखने की कोशिश करता है| वह अपने दुसरे सपने में देखता है-***"आज के सपने में पांडे बाबा हँस रहे थे| उनके साथ अलग-अलग रस्सियों में टंगे घंट भी हँस रहे थे व्यंग की हँसी| किसी के सिर पर महाराष्ट्रियन पगड़ी थी, किसी के सिर पर काठियावाडी| कोई ओडिया बोल रहा था| कोई कन्नड़|"५*** इस उपन्यास में भारतीय किसान की शोचनीय स्तिथि का वर्णन करते है | किसान जीवन की समस्याओं को पांडे जी एवं पहलवान के माध्यम प्रस्तुत किया है| पहलवान अपनी तमाम समस्याओं से जूझता है| डटकर उनका मुकाबला करता है| पराजित होकर वह बैठा नहीं रहता, अदम्य जिजीविषा और संघर्षशीलता के आधार पर वह हिंदी कथा साहित्य का एक महत्वपूर्ण चरित्र हो सकता है और वह होरी की तरह आजीवन अपने मरजाद को बनाए रखता है|

इस प्रकार शिवमूर्ति जी ने किसानों की वर्त्तमान समस्याओं को बड़े ही बारीकी के साथ यहाँ बताया है उनके साहित्य में दलित किसान, और मजदूर वर्ग को देखा जा सकता है| हिंदी साहित्य में किसान जीवन पर बहुत लिखा जा रहा है परंतु शिवमूर्ति के उपन्यास प्रेमचन्द के बाद पहली बार भारतीय किसान के जीवन-संघर्षो, कठिनाइयों, अंतर्विरोधों तथा विडम्बनाओं को उनके वर्त्तमान रूप में प्रकट करता है|

संदर्भ ग्रन्थ :

1. गोदान, प्रेमचंद

2. आख़री छलांग, नया ज्ञानोदय, पत्रिका, २००८
3. इण्डिया इनसाइड- संपा. अरुण सिंह साहित्य वार्षिकी विशेषांक २०१६
4. मंच- संपा. मयंक खरे, जनवरी-मार्च २०११, बाँदा उत्तर प्रदेश